भगत कबीर – सबद २३

कंचन सिउ पाईऐ नही तोलि ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२७

कंचन सिउ पाईऐ नही तोलि ॥
मनु दे रामु लीआ है मोलि ॥१॥
अब मोहि रामु अपुना करि जानिआ ॥
सहज सुभाइ मेरा मनु मानिआ ॥१॥ रहाउ ॥
ब्रहमै कथि कथि अंतु न पाइआ ॥
राम भगति बैठे घरि आइआ ॥२॥
कहु कबीर चंचल मति तिआगी ॥
केवल राम भगति निज भागी ॥३॥१॥१९॥

सार: आंतरिक अनुभूति का मूल्य ज्ञान, अनुभवों या उपलब्धियों के जमावड़े से नहीं बल्कि व्यक्ति की बदली हुई जागरूकता की गहराई से मापा जाता है। सच मात्रा से नहीं बल्कि गुण से जुड़ा होता है, यह बाहरी दिखावे या बौद्धिक महारत के बजाय स्पष्टता, समझ और सच्चाई से सामने आता है। जैसे-जैसे जागृत चेतना परिपक्व होती है, वह और ज़्यादा पाने की कोशिश नहीं करती बल्कि गहराई से समझने की कोशिश करती है, वह अधिक पाने या अपने भीतर अधिक संग्रह करने की इच्छा नहीं रखती बल्कि इसकी जगह समझदारी और निरंतर प्रयास का स्थान सहज उपस्थिति ले लेती है। महत्वपूर्ण यह नहीं है कि हम कितना जानते हैं, बल्कि मायने यह रखता है कि चेतना का स्तर क्या है, जिसके माध्यम से जीवन को समझते और जीते हैं।

कंचन सिउ पाईऐ नही तोलि ॥

इसका मूल्य सोने से न तो मापा जा सकता है और न ही ख़रीदा जा सकता है। यह दर्शाता है कि आंतरिक अनुभूति, सत्य या जागृत अंतरात्मा, मात्रा में नहीं बल्कि गुणों में होती है।

मनु दे रामु लीआ है मोलि ॥१॥

सर्वव्यापी चेतना को मन सौंपना ही सही मूल्य चुकाना है। यहाँ लाभकारी मूल्य चुकाने की बात रूपक में है। इसका अर्थ है कि शांति और एकत्व प्राप्त करने के लिए मन का अहं, नियंत्रण, लगाव और अलगाव पर आधारित आग्रहों को छोड़ना। (१)

अब मोहि रामु अपुना करि जानिआ ॥

अब मैं सर्वव्यापी उपस्थिति को बहुत क़रीब, अपना ही मानता हूँ। यह अहसास दिखाता है कि जिसे बाहरी उपस्थिति के रूप में खोज रहे थे, वह वास्तविकता में अपने ही अस्तित्व का सार है, जिससे पूर्णता की अनुभूति होती है।

सहज सुभाइ मेरा मनु मानिआ ॥१॥ रहाउ ॥

मेरे मन ने इस सत्य को सहजता से स्वीकार कर लिया है। यह सहज की उस अवस्था को दर्शाता है जहाँ कृतज्ञता और संतोष बिना किसी दबाव या प्रयास के स्वाभाविक रूप से भीतर विकसित होते हैं। (१)(विराम)

ब्रहमै कथि कथि अंतु न पाइआ ॥

बुद्धि की क्षमता कितनी भी ज़्यादा क्यों न हो और चाहे कितनी भी व्याख्या क्यों न की जाए, वह सर्वव्यापी सत्य की सीमा तक नहीं पहुँच सकती। यह वैचारिक प्रणालियों की सीमाओं को दिखाता है, वह सत्य के कुछ पहलुओं पर तो रोशनी डाल सकती हैं लेकिन अस्तित्व के अनंत सार को पूरी तरह नहीं समझ सकतीं।

राम भगति बैठे घरि आइआ ॥२॥

सर्वव्यापी सत्य के प्रति भक्ति तब स्थापित होती है जब यह पहचान लिया जाता है कि वह हमारे भीतर ही स्थित है। यह सहजता दिखाती है कि बुद्धि को भाग-दौड़ करने की ज़रूरत नहीं है, हमारे अस्तित्व का सत्य भीतर की जागरूकता के माध्यम से स्वाभाविक रूप से प्रकट होता है। (२)

कहु कबीर चंचल मति तिआगी ॥

कबीर कहते हैं कि चंचल स्वभाव को त्याग दिया गया है। यह मन के भीतर के शोर को शांत करने की ओर संकेत करता है जहाँ मन अब असुरक्षा और उत्तेजनाओं में नहीं भटकता।

केवल राम भगति निज भागी ॥३॥१॥१९॥
सर्वव्यापी सत्ता के प्रति भक्ति ही मेरा निजी भाग्य है। यह एकाग्रता दर्शाता है जहाँ अंतरात्मा अब द्वैत में नहीं रहती बल्कि सार्वभौमिक एकता में वास करती है। (३)(१)(१९)

तत्त्व: भगत कबीर हमें अपना ध्यान भीतर की ओर मोड़, मन में शांति का केंद्र बनाकर आंतरिक शांति पाने के लिए प्रेरित करते हैं। शांति की इस अवस्था में, मनगढ़ंत डर अपना असर खो देते हैं और बेचैन करने वाली भावनाएं शांत हो जाती हैं। यह स्थिरता हमारी समझ को तेज़ करती है और हमें दूसरों से तुलना करने या स्वयं पर संदेह करने जैसी भटकाने वाली सोच से मुक्त करती है। बाहरी रोमांच के बजाय भीतर शांति पाकर, हम जीवन जीने का एक अधिक स्थिर, समझदारी भरा और गहरे सुकून का तरीक़ा अपना सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com